आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 06/06/2023; Published: 24/06/2023

कविता

इस खजाने को न होने दें कभी बरबाद

- कुमार मनीष अरविंद

तिर रहा है साथ लय के
हृदय मेरा
गहन वन में
नदी-निर्झर का जहाँ है गीत,
हवा बहती गुनगुनाती फिर रही है....
एक अद्‌भुत अनकहा- सा
तरल-सज्जल-विरल-झरझर-
महमहाता-सा छिंटा संगीत !

पक्षियों की चहचहाहट-
अह! सुरीली !
गीत सुमधुर
जो किसी ने नहीं गाया
आज के पहले कभी भी !

हृदय मेरा
तितलियों के पंख पर आरूढ़ होकर
देख कैसे तैरता
स्वप्न- सम्मोहन-भरे

इस वन के आंगन में चतुर्दिक....

रंग की सरिता बही ज्यों-

कुछ वही अहसास पाता !

****